दादा भगवान परिवार का
सितंबर २०२०
शुल्क प्रति नकल : ₹ २०/-

अक्रम एक्सप्रेस

संपादकीय

बालमित्रों,

हम अपने पास कोई भी चीज़ तभी रखते हैं जब वह हमें बहुत अच्छी लगती है। यदि ऐसा सोचें तो भूलें भी हमें बहुत अच्छी लगती होगी, इसीलिए तो हम उनसे छुट नहीं पाते। सालों बाद भी वही गुस्सा, वही झूठ बोलना, वही मारामारी....

कब छूटेंगे हम इन सभी भूलों से?

यदि वास्तव में आपको भूलें अच्छी नहीं लगती और उनमें से छूटना है तो यह अंक ज़रूर पढ़ना। आपको उससे छुटने के उपाय मिलेंगे।

तो आइए, यह अंक पढ़ें और भूलों को "टाटा, बाय-बाय" कहें।

-डिम्पलभाई मेहता

भूलें रहने देनी है?

Editor : Dimple Mehta

Printer & Published by

Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist - Gandhinagar.

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist - Gandhinagar.

Printed at
Amba Offset
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar - 382025.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist-Gandhinagar.

वर्ष : ८ अंक: ५
अखंड क्रमांक: ९०
सितंबर २०२०

....

संपर्क सूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला . गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन : (०७९) ३९८३०१००
email:akramexpress@dadabhagwan.org
Website: kids.dadabhagwan.org

© 2020, Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved

दादाश्री कहते हैं...

दादाश्री : कुछ लोग तो भूल को जानते हैं फिर भी उसको स्वीकार नहीं करते और ऊपर से यदि कोई डाँटे तो उल्टा बोलते हैं कि "मैंने ऐसा कुछ नहीं किया..." या तुरंत ही दूसरों के ऊपर डाल देते हैं कि 'यह तो इसने ऐसा किया।' अरे, तुम्हे भूल को रहने देना है?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

दादाश्री : तो उसे क्यों छिपा रहे हो? यदि उसका रक्षण करोगे तो वह कैसे जाएगी?

प्रश्नकर्ता : दादा ऐसा क्यों होता है?

दादाश्री : अपनी इज़्ज़त रखने के लिए, और क्या? "कोई मेरे लिए कैसा सोचेगा? क्या सोचेगा? मैं कैसा दिखूँगा?" ऐसे विचार आते हैं इसलिए भूलों का रक्षण हो जाता है या दूसरों के ऊपर डाल देते हैं। बुद्धि भूलों का तुरंत रक्षण कर देती है। अरे, उसको स्वीकार कर लो।

प्रश्नकर्ता : किस तरह स्वीकार करें, दादा?

दादाश्री : यदि कोई हमारी भूल बताए तो तुरंत हमें स्वीकार कर लेना चाहिए कि "हाँ, मेरी भूल है। अब से मैं ध्यान रखूँगा।" उल्टा हम कहते हैं कि "तुझे कोई हर्ज़ नहीं है" तो फँसे। यदि एक बार ऐसा कह दोगे, तो भूल को लगेगा कि यह घर अच्छा है। इसने तो हमारा बचाव किया इसलिए वह नहीं जाएगी। फिर वह हमेशा के लिए रह जाएगी। जब भूल का पक्ष लेते हैं तब खुद को भान नहीं होता कि यह मैं भूल का रक्षण कर रहा हूँ। यदि ऐसा नहीं करे तो भूल अपने समय से चली ही जाती है।

यह तो नई ही बात है!

एक बार भूल का रक्षण करे तो उसका बीस साल आयुष्य बढ़ जाता है।

कोई हमारी भूल बताए तो उसका उपकार मानना चाहिए कि मुझे भूल दिखाई नहीं दे रही थी और उसने मुझे दिखाई। इस तरह से हम भूल का स्वीकार करें तो भूल आराम से चली जाती है।

ज्ञानी पुरुष के सिवाय हमारी भूल को कोई खत्म नहीं कर सकता।

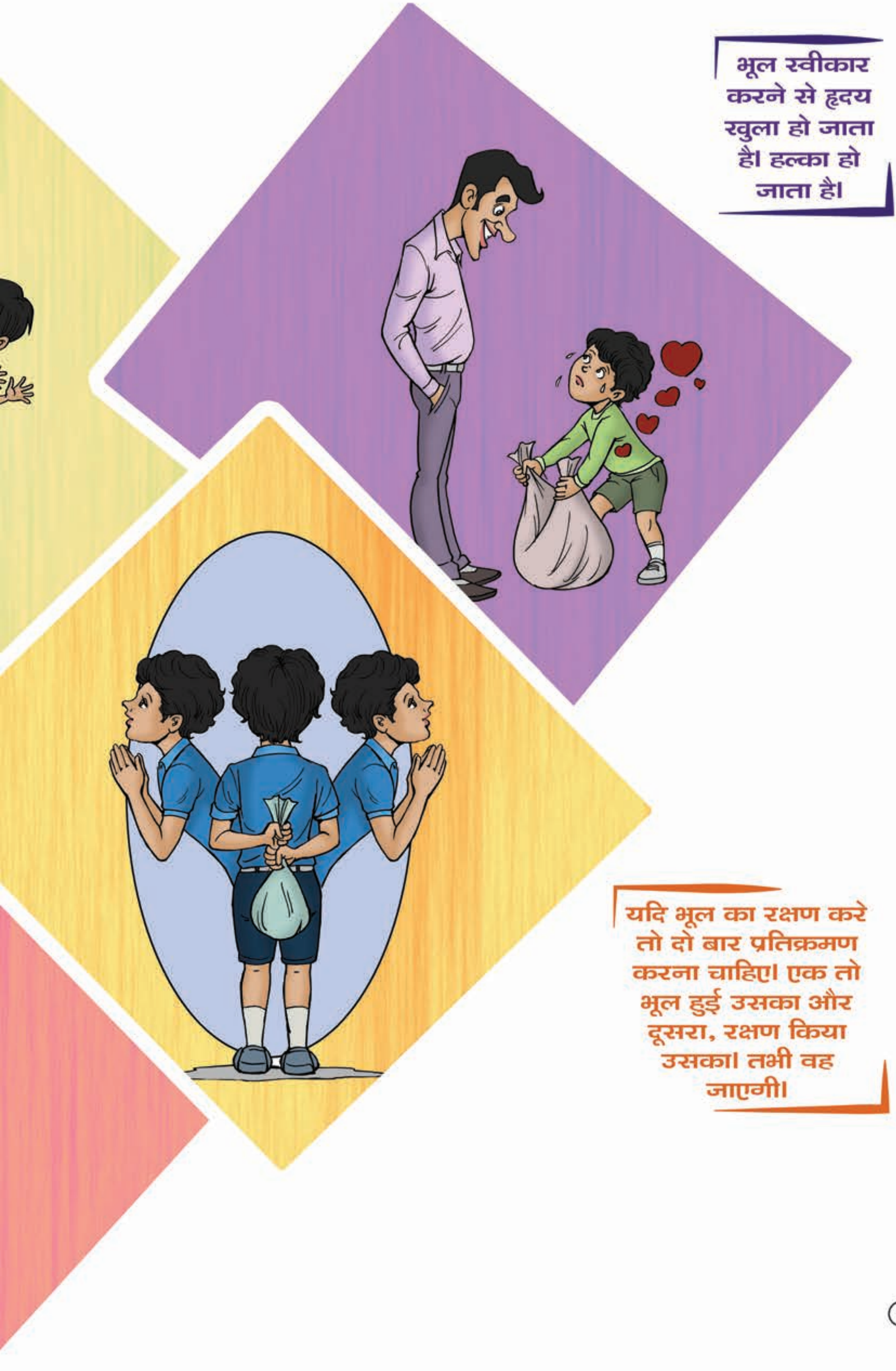
भूल स्वीकार करने से हृदय खुला हो जाता है। हल्का हो जाता है।
यदि भूल का रक्षण करे तो दो बार प्रतिक्रमण करना चाहिए। एक तो भूल हुई उसका और दूसरा, रक्षण किया उसका। तभी वह जाएगी।

“थैंक गॉड! वे लोग वर्तमान में वापस आ गए।” “हैरी पॉटर एन्ड प्रिज़नर ऑफ अज्काबान” मूवी का अंतिम सीन देखकर रिषा को राहत हुई। उसने वेफर का अंतिम टुकड़ा मुँह में डाला और टी.वी. का स्विच बंद कर दिया।

“ऐसे कोई टाइम टर्नर से भूतकाल और भविष्यकाल देखने मिले तो कितना मज़ा आ जाए!!” नेत्री तो मूवी में देखे हुए टाइम-टर्नर के खयालों में खोई हुई थी।

मूवी में तल्लीन सिद्धार्थ कुर्सी के किनारे पर आ गया। “हाँ... लाइफ में रोमांच आ जाए!” रिषा की बात पर सिद्धार्थ ने सहमति जताई।

टाइम टर्नर

“रिलैक्स सिद्धार्थ, मूवी समाप्त हो गयी है।” व्योम ने हँसते हुए कहा, “और रोमांच के लिए टाइम-टर्नर की क्या ज़रूरत है? हमारी गोवा ट्रिप से ज्यादा रोमांचक क्या हो सकता है!”

गोवा का नाम सुनकर सभी की आँखों में चमक आ गयी। पहली बार वेकेशन में चारो कज़िन्स गोवा घूमने जाने वाले थे।

“आई कान्ट वेट टू सी ‘द गोवा कार्निवल।‘ थेंक्स व्योम, तू है इसलिए हम सभी को परमिशन मिली है। हमारा अच्छा-अच्छा भाई” नेत्री ने अपने बड़े कज़िन भाई का गाल खींचा।

“ठीक है, ठीक है,” व्योम ने नेत्री का हाथ हटाया, “सभी कल सुबह टाइम पर तैयार हो जाना। हम ठीक सात बजे निकल जाएँगे।”

“व्योम साहब, आप टाइम से तैयार हो जाना। हम तो तैयार ही होंगे।” रिषा ने मज़ाक में कहा।

तभी डोर बेल बजी। “लगता है रिद्धि मामी (नेत्री की मम्मी) आ गई” कहकर रिषा ने दरवाज़ा खोला।

“हाय बेटा,” मामी ने टेबल पर पर्स रखा और यहाँ-वहाँ नज़र घुमाई। घर में बिखरी हुई चीज़ों को देखकर उन्हें गुस्सा आ गया।

“यह क्या नेत्री? यह आइस्क्रीम ऐसे पड़ा है,

नाश्ते की प्लेट ऐसे रखी है! कितनी बार तुझसे कहा है कि घर का थोड़ा ध्यान रख। ऐसे अस्त-व्यस्त मत कर," घर में आते ही मम्मी ने डाँटा।

"ओह मम्मी, मूवी इतनी इन्टरेस्टिंग थी कि ध्यान ही नहीं रहा। तुम्हें पता है, मूवी में टाइम-टर्नर था।" नेत्री ने मम्मी का ध्यान दूसरी ओर खींचने की कोशिश की। नेत्री की मम्मी और नाराज़ हो गई। चीज़ो को जहाँ-तहाँ रखने की आदत तो थी लेकिन नेत्री की खुद की भूलों को स्वीकार नहीं करने की आदत पर उन्हें ज़्यादा गुस्सा आया। "नेत्री, यदि तू बहाना बनाने के बजाय अपनी भूलों का स्वीकार करेगी तो भूलें खत्म होगी। यदि भूलों का ही पक्ष लेती रहेगी तो वे कभी तेरा पीछा नहीं छोड़ेगी।"

"प्लीज मम्मी, अब मुझे कोई लेक्चर मत देना।" नेत्री ने पलटकर जवाब दिया।

व्योम और रिषा ने तुरंत ही नाश्ते की प्लेट्स और आइस्क्रीम कप्स उठाकर रसोईघर में रख दिए।

नेत्री का व्यवहार देखकर मम्मी निराश हो गई। उन्होंने गहरी साँस ली और फिर शांति से कहा, "ठीक है बेटा, मैं गरमा-गरम डिनर बना रही हूँ। सभी कल की गोवा ट्रिप के लिए तैयार हो ना?"

दूसरे दिन सुबह जब सभी निकलने के लिए तैयार थे तब नेत्री थोड़ी उलझन में थी।

"रिषा, मुझे मेरा फेवरिट पिंक टी-शर्ट नहीं मिल रहा है।" नेत्री ने अपने कपड़ों को ऊपर-नीचे करके देखा।

"कपड़े ठीक से संजोकर रखे होते तो..."

रिषा का वाक्य पूरा हो उससे पहले ही नेत्री का बहाना तैयार था, "पिछले हफ्ते परीक्षा थी इसलिए मुझे संजोकर रखने का टाइम नहीं मिला। वर्ना मैं सब संजोकर ही रखती हूँ।"

"अफकोर्स मिस परफेक्ट, तेरे साथ आर्ग्यूमेन्ट में कौन जीत सकता है। यह ले तेरा टी-शर्ट," रिषा ने कपड़े की थप्पी के नीचे दबा हुआ टी-शर्ट बाहर खींचा।

बेग में टी-शर्ट रखकर दोनों बाहर भागे, "चलो, लेट्स गो... वी आर रेडी!"

सुहाना मौसम और सुंदर हरियाली की मज़ा लेते हुए चारों की सवारी शाम को गोवा पहुँची।

दूसरे दिन सुबह चाय-नाश्ता करके चारों की टोली गोवा-कार्निवल देखने के लिए निकल पड़ी। हवा में रंग-बिरंगे गुब्बारे झूम रहे थे। परेड में सजी हुई घोड़ा-गाड़ी, सुंदर सजावट वाले फ्लोट्स और रंग-बिरंगी पोशाक पहनकर डान्स करते हुए कलाकारों को देखकर सभी को मज़ा आ गया।

परेड देखने के बाद, सभी

आसपास बने हुए स्टॉल्स देखने के लिए निकल गए। नेत्री की नज़र एक जगह रूक गई, "टाइम-टर्नर" गोल्डन ब्राउन कलर के परदे पर बड़े अक्षरों में लिखा था।

"लुक एट देट....।" नेत्री ने अपने कज़िन्स को रोका, "देखो, वहाँ लिखा है कि टाइम-टर्नर की मदद से अपने भूतकाल और भविष्यकाल को जानिए।"

"यह सब फालतू होता है!" व्योम ने कहा। लेकिन नेत्री का ध्यान तो उस स्टॉल पर अटक गया। "मुझे एक बार देखना है। क्या पता सही भी हो!"

"ओ.के... तो तू और रिषा वहाँ जाओ... सिद्धार्थ और मैं एक चक्कर लगाकर आते हैं," कहकर नेत्री के भाई वहाँ से बच निकले।

पीले और गुलाबी रंग का स्कार्फ पहने हुए एक वृद्ध स्त्री ने उन दोनों लड़कियों का टाइम-टर्नर स्टॉल पर स्वागत किया। रिषा और नेत्री ने धीरे से स्टॉल के अंदर प्रवेश किया। सूर्य के प्रकाश में चमकते हुए टाइम-टर्नर को देखकर नेत्री की आँखों में चमक आ गई। उसने उत्साह से पूछा, "क्या यह वही टाइम-टर्नर है जो हैरी पॉर्टर मूवी में था?"

वृद्ध स्त्री ने एक आई-ब्रो ऊँची करके गंभीरता से कहा, "यह टाइम-टर्नर" तुम्हारा भूतकाल और भविष्य काल बताएगा।" नेत्री के चेहरे पर थोड़ी उलझन दिखने लगी।

"क्या करूँ?" नेत्री ने इशारे से रिषा से पूछा। उसकी जिज्ञासा को देखकर रिषा ने उसे आगे बढ़ने का इशारा किया।

"ठीक है, मुझे देखना है कि बीस साल बाद मेरा जीवन कैसा होगा।" नेत्री ने वृद्ध स्त्री से कहा।

"अच्छा! तो तैयार हो जाओ अपना भविष्य देखने के लिए!" वृद्ध स्त्री ने नेत्री से आँखें बंद करने के लिए कहा। उसने नेत्री के गले में एक चेन पहनाई और समझ में ना आए ऐसे शब्दों का उच्चारण किया। कुछ ही क्षणों में नेत्री एक अलग दुनिया में पहुँच गई। करीब पच्चीस साल की स्त्री एक ऑफिस के केबिन में बैठी हुई थी।

"अरे, यह तो मैं ही हूँ!" अपना भावी रूप देखकर नेत्री को थोड़ा अजीब लगा। अस्त-व्यस्त पड़ी हुई फाइलों के ढेर में नेत्री कुछ ढूँढ रही थी। "हे भगवान! कहाँ गयी वह फाइल, यहीं तो रखी थी।"

तभी फोन की घंटी बजी। "हाँ, सर। हाँ सर... मैं वही ढूँढ रही हूँ।" नेत्री चिंतित थी।

उधर से आवाज़ आई, "मिस नेत्री, हमें आपसे सहानुभूति है लेकिन अब यह काम हम किसी और को दे रहें हैं। यदि आपकी फाइल समय पर सबमिट हो जाती तो ऐसा नहीं होता!"

"प्लीज़ सर। मुझे एक चान्स दीजिए। मैं कल तक ज़रूर सबमिट कर दूँगी।" नेत्री ने विनती की।

"सॉरी मिस नेत्री।"

और फोन कट हो गया। परेशान नेत्री की आँखों से आँसू बहने लगे।

अपना ऐसा गमगीन भविष्य देखकर नेत्री घबरा गई, "क्या मेरी लापरवाही बीस साल बाद भी मेरा पीछा नहीं छोड़ेगी?" कुछ ही क्षणों में वह वर्तमान में वापस आ गई।

नेत्री का उदास चेहरा देखकर रिषा ने पूछा, "क्या हुआ? सब ठीक है ना?"

नेत्री को कुछ जवाब नहीं सूझा। "हाँ" उसने शॉर्ट में कहा।

वृद्ध स्त्री को पैसे देकर दोनों स्टॉल से बाहर निकले। बाहर की खुली हवा में नेत्री ने गहरी साँस ली। तभी व्योम और सिद्धार्थ वहाँ आ गए।

"तेरा जादूमंतर पूरा हो गया हो तो चलें?" व्योम ने मज़ाक में कहा।

नेत्री बिल्कुल गुमसुम हो गयी थी। कुछ भी जवाब दिए बिना वह आगे चलने लगी। शाम को बीच पर जब सभी कज़िन्स मस्ती कर रहे थे तब नेत्री अपने भविष्य के विचारों में खोई हुई थी।

दूसरे दिन सभी ने गोवा की ऐतिहासिक जगहों की टूर करने का प्लान बनाया।

"गेट अप व्योम, हम बस मिस कर देंगे।" रिषा ने व्योम को उठाया। लेकिन व्योम पिछले दिन की थकान की वजह से उठने का नाम ही नहीं ले रहा था। जब तक तैयार होकर सब बस स्टैन्ड पर पहुँचे तब तक बस निकल चुकी थी।

"दूसरी बस अब एक घंटे के बाद मिलेगी।" टूर गाइड ने बताया।

"यह सब तेरी वजह से हुआ व्योम," रिषा ने चिढ़ते हुए कहा। "तेरी देर से उठने की आदत की वजह से अपनी बस मिस हो गई।"

"सॉरी रिषा, मुझे पता है कि यह मेरी कमज़ोरी है।" व्योम ने सरलता से अपनी भूल स्वीकार कर ली। यह देखकर नेत्री को आश्चर्य हुआ। उसने सोचा, "यदि व्योम की जगह मैं होती तो कितने बहाने बनाए होते।"

उस दिन रात को सभी वापस लौटने की तैयारी कर रहे थे।

व्योम के पास जाकर नेत्री ने धीरे से कहा, "व्योम एक सवाल पूछूँ?"

"इसमें पूछने की क्या बात है? पूछ न!" व्योम बैग में कपड़े जमा रहा था।

"आज सुबह कितनी आसानी से तुमने अपनी भूल स्वीकार कर ली। क्या तुम्हें बहाने बनाने का मन नहीं हुआ।"

व्योम मुस्कुराने लगा। नेत्री को अपने पास बिठाकर उसने कहा, "नेत्री, भूलों का स्वीकार करने से मुझे बहुत हल्कापन और मुक्तता लगती है। दूसरों के सामने अच्छा दिखने के लिए जब हम अपनी भूलें छिपाते हैं तब हमें भार लगता है और सामने वाले को भी अकुलाहट होती है। और जिस भूल का हम रक्षण करते हैं वह भूल हमें किस तरह छोड़ेगी?"

नेत्री को "टाइम-टर्नर" में देखा हुआ अपना भविष्य फिर से दिखा और उसने सोचा, "यदि मैं हमेशा अपनी भूल का रक्षण करती रहूँगी तो बीस साल बाद भी वह भूल मुझे नहीं छोड़ेगी और मेरा ही नुकसान होगा। अब से मैं अपनी भूलों को स्वीकर कर लूँगी।" यह निश्चय होते ही नेत्री के चेहरे पर मुस्कुराहट आ गई।

"क्या हुआ नेत्री?" नेत्री का वर्तन देखकर व्योम को आश्चर्य हुआ।

"कुछ नहीं व्योम। अपना सरल फार्म्युला बताने के लिए - थैंक्स!" अभी भी नेत्री के चेहरे पर मुस्कुराहट थी।

गोवा से वापस लौटकर नेत्री के कज़िन्स अपने-अपने घर जाने के लिए रवाना हुए।

शाम का समय था। हमेशा की तरह नेत्री सोफे पर लेटकर टी.वी देख रही थी। अभी तक उसने गोवा ट्रिप में पहने हुए कपड़े बैग में से निकाले नहीं थे।

"नेत्री क्या जब बैग में से बदबू आने लगेगी तब तू कपड़े धोने के लिए डालेगी?" मम्मी ने कहा।

"मैं बहुत थक गयी हूँ" वह ऐसा कहने ही वाली थी, तभी उसे अपना किया हुआ निश्चय याद आ गया। "सॉरी, मम्मी। मैं तुरंत ही कपड़े धोने के लिए डाल देती हूँ।"

नेत्री के ये शब्द सुनकर मम्मी को आश्चर्य हुआ।

खुद की भूल को स्वीकार करके नेत्री को सचमुच ही एक अनोखी शांति का अनुभव हुआ। उसे लगा, "टाइम-टर्नर से भूतकाल में जाकर मैं अपनी भूलों को सुधार नहीं पाऊँगी लेकिन वर्तमान की भूलों को सुधारने का एक नया उपाय मुझे मिल गया है। जो ज़रूर ही मेरे भविष्य का लाइफ-टर्नर साबित होगा।"

और उसने अपने बेग में से कपड़े निकालकर मशीन में धोने के लिए डाल दिए।

बाथरूम के आईने के सामने देखकर प्रीतल ने अपनी स्पीच तैयार की।
थैंक यू प्रिन्सिपल सर, थैंक यू टीचर्स। यह मौका देने के लिए मैं आपकी बहुत-बहुत आभारी हूँ। मैं वचन देती हूँ कि मैं हमारी स्कूल का गौरव बनूँगी।
प्रीतल, बाहर निकल। यह सब नाटक स्कूल में जाकर करना स्कूल बस आ जाएगी।
व्हाट डु यू मीन बाइ नाटक?!! मैं तो बाथरूम साफ कर रही थी। बाय द वे, तुमने मेरा प्रोजेक्ट ड्रॉइंग तैयार कर दिया?
यस मैडम... रेडी है। टेबल पर से ले लो।
प्रीतल का प्रोजेक्ट ड्रॉइंग देखकर टीचर बहुत खुश हो गई।
ग्रेट जॉब प्रीतल!! हर बार की तरह आज भी तुम्हारा काम बहुत अच्छा है।
थैंक यू मैडम।
जो काम उसे आता नहीं था उस काम का प्रीतल ने आसानी से श्रेय ले लिया। खुद की किसी भी कमी को स्वीकार करना प्रीतल के लिए असंभव था।
नताशा, आज फिर तुम्हारे ड्रॉइंग का कोई ठिकाना नहीं है। प्रीतल से कुछ सीखो।
सॉरी मैडम।

प्रीतल को टीचर की किसी भी बात में रुचि नहीं थी। हर पाँच मिनट बाद उसकी नज़र घड़ी की ओर जाती थी। अंत में वह पल आ ही गया।
प्रिन्सिपल सर ने सभी को स्कूल असेम्ब्ली में एक खास सूचना के लिए बुलाया है।
प्रिन्सिपल सर ने असेम्ब्ली हॉल में घोषणा की।
वेलकम एवरीवन। "स्टूडन्ट्स एक्सचेन्ज प्रोग्राम" में नताशा का सिलेक्शन हुआ है। हम सभी नताशा को ऐसी शुभकामनाएँ देते है कि अगले छः महीने का समय उसकी ज़िंदगी का एक स्वर्णकाल बन जाए।
पूरा हॉल तालियों की गड़गड़ाहट से गूँज उठा। प्रीतल को ज़बरदस्त झटका लगा। उसके होश उड़ गए।
बाकी का दिन उसने जैसे-तैसे करके बिताया। स्कूल खत्म होने के बाद वह प्रिन्सिपल सर के केबिन में गई।
मे आई कम इन सर?
प्रीतल की आँखों में आँसू थे।
मेरे साथ ऐसा अन्याय? सभी सब्जेक्ट में मेरा स्कोर परफेक्ट है। फिर भी आपने मुझे सिलेक्ट नहीं किया सर?
11 Akram Express

प्रिन्सिपल सर ने प्रीतल को पानी का गिलास दिया।
बेटा, मेरी कसौटी का माप यह नहीं था की मेरी स्टूडन्ट परफेक्ट हो। मैं तो ऐसी स्टूडन्ट की खोज में था जिसमें भूले हों लेकिन साथ-साथ भूलों को पहचानकर उन्हें स्वीकारने की क्षमता भी हो।
बहुत साल पुरानी बात है। एक विद्वान पंडित मृत्यु शय्या पर थे। अपनी विद्या की धरोहर सौंपने के लिए उन्होंने अपने एक सौ महा-समर्थ छात्रों में से एक ऐसे छात्र को पसंद किया जो न तो योग्य साधना करता था और ना ही प्रार्थना।
प्रीतल ध्यान से सर की बात सुन रही थी।
बाकी के निन्यानवे विद्यार्थी बहुत गुस्सा हुए, तुम्हारी तरह उन्हें भी ऐसा लगा कि उनके साथ बहुत बड़ा अन्याय हुआ है।
विद्यार्थीयों की शिकायत सुनकर पंडित ने अपनी पसंदगी के पीछे का आशय बताया।

तुम सभी ने हमेशा अपने अच्छे गुणों का ही प्रदर्शन किया है। कभी अपनी भूलें नहीं बताई हैं। मैं तुम्हें पहचानता ही कहाँ हूँ?
इसलिए मैंने ऐसे छात्र को पसंद किया जिसने हमेशा अपनी भूलों का स्वीकार किया है और जिसे मैं अच्छी तरह पहचानता हूँ।
बेटा, भूलों को ढककर इज़्ज़त बढ़ाने की कीमत नहीं है लेकिन भूलों का स्वीकार करके भूलों में से वापस लौटने की कीमत है। समझ में आया तुम्हें?
हाँ सर...
भूलों का स्वीकार करने का निश्चय करते ही प्रीतल को हल्कापन महसूस हुआ।

जीवंत उदाहरण

युवा अवस्था में गांधीजी पर उनके एक मित्र के संग का खराब असर हुआ। मित्र के आग्रह से गाँधीजी ने मटन खाना शुरु कर दिया! पहली बार मटन खाने के बाद उन्हें लगा जैसे पेट के अंदर बकरी रो रही हो। मित्र की संगत में गाँधीजी सिगरेट पीना भी सीख गए। सिगरेट के पैसे इकट्ठे करने के लिए कभी-कभी वे नौकर के पैसे भी चुरा लेते थे। एक बार उन्होंने अपने भाई के हाथ के कड़े का थोड़ा सोना बेच दिया!

गाँधीजी के दिल पर इन सभी गलत कामों का बहुत भार रहता था। उन्होंने अपनी गल्तियाँ पिता को बताकर माफी माँगने का निश्चय किया। लेकिन पिता का सामना करने की उनमें हिम्मत नहीं थी। इसलिए उन्होंने अपनी सभी भूलें एक पत्र में लिखकर पिताजी को दे दी। साथ ही साथ, खुद को योग्य सजा देने की विनती भी की। बीमार पिता को पत्र देकर वे उनके पलंग के सामने चुपचाप खड़े रहे।

पत्र पढ़ते ही पिताजी की आँखों से आँसू बहने लगे। यह देखकर गाँधीजी का दिल टूट गया। पिता का दिल दुखाने का उन्हें बहुत पछतावा हुआ। उसी समय, उन्होंने फिर से कभी भी ऐसी भूलों को नहीं करने का दृढ़ निश्चय किया और उस निश्चय के प्रति अंत तक सिन्सियर रहे। पत्र पढ़ने के बाद पिता ने न तो गुस्सा किया और न ही उन्हें डाँटा। वे मौन रहे। अपने पुत्र को माफ कर दिया है, ऐसा दिखाने के लिए उन्होंने पत्र फाड़ दिया! पिता का ऐसे अद्‌भुत प्रेम ने गाँधीजी के दिल को छु लिया।

गाँधीजी हमारे जैसे ही एक सामान्य व्यक्ति थे। लेकिन छोटी उम्र में अपनी भूलों को खत्म करने के लिए उन्होंने जो रास्ता अपनाया उससे वे असाधारण व्यक्ति बन गए। उन्हें समझ में आ गया था कि भूलों का स्वीकार करने से, पश्चाताप करने से माफी माँगने से उनसे छुटकारा मिल सकता है।

चलो खेलें...?

१. कौन सा शब्द ऊपर- नीचे से, आगे-पीछे से देखने पर एक समान ही रहेगा। सही तरह से रखो।
MSIWS

२. तीन अक्षरों का अंग्रेजी शब्द है पर दो ही अक्षर का उपयोग होता है और सुनाई देता है एक ही अक्षर। जो हमारे शरीर का एक अंग है।

३. कौन सा अंग्रेजी शब्द जब केपीटल लेटर में लिखें तो आगे-पीछे और ऊपर-नीचे एक समान ही दिखता है?

४. नीचे दिए गए चित्र में से १२ चीजें ढूँढों

पज़ल का जवाब :
1. SWIMS
2. EYE
3. NOON

ऐतिहासिक गौरवगाथा...

श्रेणिक राजा के पिता, राजा प्रसेनजित, मगध राज्य के राजा थे। उनके राज्य में लोहचूर नामक एक होशियार चोर रहता था। वह बहुत चोरियाँ करता था लेकिन किसी भी तरह पकड़ में नहीं आता था।

एक बार वह जूआ खेलने बैठा। जूए में जीतने पर खुश होकर, उसने जूए में जीता हुआ सारा धन दान में दे दिया। घर लौटते समय उसे भूख लगी। राजमहल के पास से गुजरने पर उसे स्वादिष्ट भोजन की खुशबू आई। उसका मन ललचाया।

उसने सोचा, "चलो आज का भोजन राजमहल में करते हैं।"

लोहचूर के पास, अदृश्य कर सके, ऐसा एक अंजन था। अंजन लगाकर वह अदृश्य हो गया। उसने राजमहल में प्रवेश किया। देखा तो राजा भोजन कर रहे थे। उसने उनके पास बैठकर, उनकी थाली में से खाना शुरू कर दिया। राजमहल के शाही भोजन का स्वाद उसके मन को भा गया।

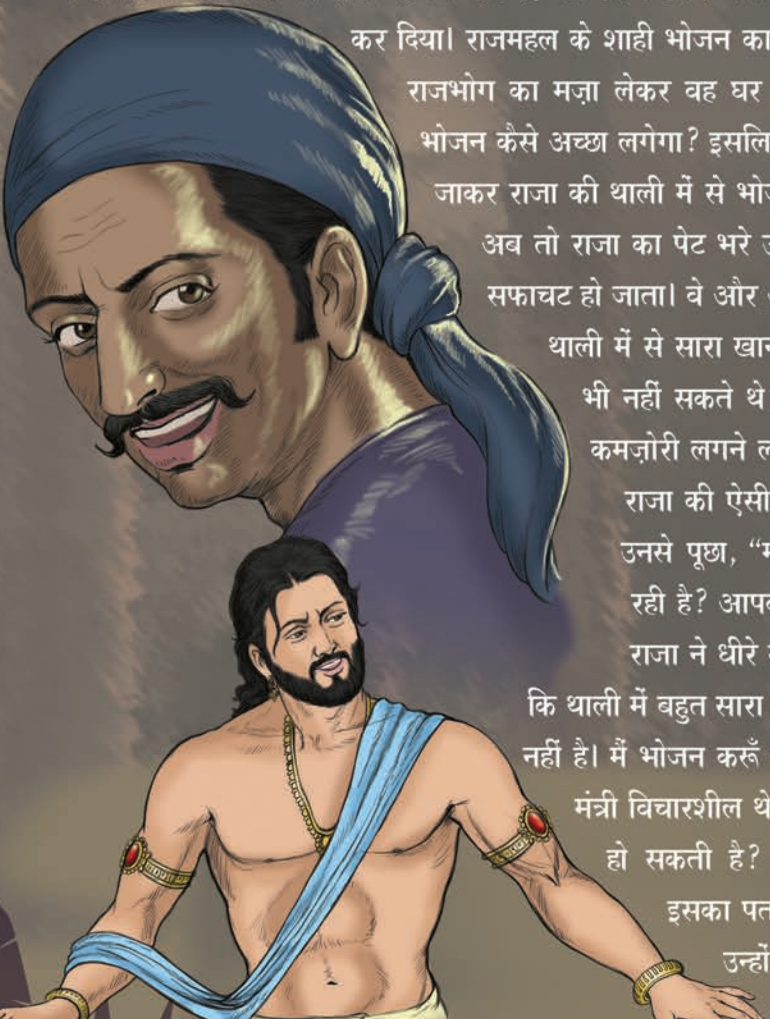

राजभोग का मज़ा लेकर वह घर तो आ गया लेकिन अब उसे घर का भोजन कैसे अच्छा लगेगा? इसलिए वह रोज अंजन की मदद से राजमहल जाकर राजा की थाली में से भोजन करने लगा।

अब तो राजा का पेट भरे उससे पहले ही थाली में से सारा भोजन सफाचट हो जाता। वे और अधिक लेकर खाने जाएँ उससे पहले तो थाली में से सारा खाना साफ हो जाता। वे शर्म से और माँग भी नहीं सकते थे। इसकी वजह से कुछ ही दिनों में उन्हें कमज़ोरी लगने लगी।

राजा की ऐसी हालत देखकर एक दिन उनके मंत्री ने उनसे पूछा, "महाराज! क्या आपको कोई चिंता सता रही है? आपका शरीर कमज़ोर क्यों दिख रहा है?"

राजा ने धीरे से जवाब दिया, "मंत्री जी, बात ऐसी है कि थाली में बहुत सारा खाना परोसने के बावजूद भी पेट भरता नहीं है। मैं भोजन करूँ उससे पहले ही खत्म हो जाता है।"

मंत्री विचारशील थे। उन्हें लगा, "क्या यह कोई देवी विद्या हो सकती है? क्या कोई अदृश्य बनकर आता है? इसका पता लगाना चाहिए।"

उन्होंने एक युक्ति की। उन्होंने भोजन खंड में ज़मीन पर चंपा के सूखे फूल बिछावा दिए। जैसे ही चोर आया और

उसके पैर ज़मीन पर पड़े कि कररर... आवाज़ आई। मंत्री सतर्क हो गए। उन्होंने तुरंत ही खंड के दरवाज़े बंद करवा दिए। फिर खंड में घुटन हो ऐसा धूँआ किया। चोर की आँख में धूँआ जाने से आँखों में से पानी निकलने लगा। अंजन धुल गया और वह सभी को दिखाई दिया। उसे पकड़कर राजा के सामने खड़ा किया।

राजा ने उसे बेइज्जत करने नगर में घुमाकर फाँसी देने की सज़ा सुनाई। फाँसी का समय आया। लोहचूर रोने लगा। इतने में जिनदत्त नामक एक सेठ वहाँ से गुजर रहे थे। लोहचूर की अवस्था देखकर उन्हें दया आ गई।

वे चोर के पास गए और कहा,"हे चोर! किए हुए पापों का फल तो हमें भुगतना ही पड़ता है। लेकिन अंतिम क्षण में भी यदि तुम पश्चापात करोगे तो तुम्हारा अगला जन्म सुधर जाएगा। इसलिए तुम चोरी का भाव त्याग दो।"

लोहचूर बोल उठा, "चोरी करने से मैं जितना सुखी हुआ उससे तो यह दुःख बहुत ज्यादा है। मैंने जो पाप किए हैं वे सभी मुझे प्रत्यक्ष दिखाई दे रहे हैं, उन्हें देखकर मैं काँप उठा हूँ। लेकिन सेठजी मुझे बहुत प्यास लगी है। मुझे थोड़ा पानी दीजिए न।"

यह बात राजाज्ञा विरुद्ध होने की वजह से सेठ ने पहले टाल दिया लेकिन फिर कहा, "तू जीवनभर किए हुए पापों की आलोचना कर।"

सेठ ने उसे पश्चाताप करके दोषों में से छूटने की विधि समझाते हुए कहा, "इससे तेरे पापों का नाश हो जाएगा। सर्व जीवों के साथ मैत्री भाव रख और नवकार मंत्र का जाप कर। तब तक मैं तेरे लिए पानी लाता हूँ।"

लोहचूर, सेठ की कल्याण वाली वाणी सुनकर गद्‌गद् होकर बोला, "क्या सचमुच इस नियम और नमस्कार से मेरे पापों का नाश हो जाएगा?"

सेठ ने कहा, "इसमें कोई शंका करने जैसा नहीं है। इस नवकार के स्मरण से कितने ही बड़े पाप नष्ट हो जाते हैं। इसका स्मरण करने से मनुष्य ही नहीं लेकिन पशु को भी स्वर्ग प्राप्त होता है।" ऐसा कहकर सेठ जल लेने गए।

जब तक सेठ पानी लेकर आए तब तक लोहचूर की मृत्यु हो गई थी।

लोहचूर नवकार मंत्र में इतना लीन हो गया था कि उसने परम शांति और समाधि का अनुभव किया। तभी उसका आयुष्य पूरा हो गया और उसका जन्म देवलोक में हुआ।

कितना बल है "पश्चाताप" और "नवकार मंत्र" में। अगला जन्म सुधर जाता है...।

मीठी यादें...

एक आप्तपुत्र भाई शनिवार-रविवार का सत्संग करके वलसाड से दादा-दर्शन लौटे। अगले दिन सुबह वलसाड के एक ब्रह्मचारी भाई भी अपने काम से अहमदाबाद आए और दादा-दर्शन भी आए। वे उन आप्तपुत्र से मिले। आप्तपुत्र भाई ने उनके साथ सत्संग शुरू कर दिया। तब सुबह के करीब पौने दस बजे होंगे। उनकी दस बजे से प्रेस पर जाने की सेवा थी। साढ़े दस बज गए थे लेकिन वे आप्तपुत्र भाई सत्संग ही करते रहे।

तभी उन्हें फोन आया कि तुरंत केमिस्ट से कोई दवाई लेकर आनी है। उन्होंने कहा, "मैं जा रहा हूँ।" लेकिन फिर भी वे सत्संग ही करते रहे। आधे-पौने घंटे के बाद फिर फोन आया कि क्या वे दवाई ले आए?

उन्होंने जवाब दिया कि "अभी मैं गया ही नहीं हूँ।"

पूछा, "क्या कर रहे हो?"

उन्होंने जवाब देते हुए कहा, "इन भाई के साथ सत्संग कर रहा हूँ।"

नीरू माँ को पता चलने पर उन्होंने उन आप्तपुत्र भाई को डाँटा,"अरे, दस बजे प्रेस पर जाना था। अभी दो दिन सत्संग करके आए हो और फिर से सत्संग? यह तुम्हारी सत्संग करने की वाणी की भूख को देखना। यह "मैं जानता हूँ" का अहंकार है। सत्संग करने में भी नॉर्मेलिटी रखनी है। यदि "मैं जानता हूँ" का अहंकार बढ़ जाएगा तो मार खिलवाएगा।"

इस तरह नीरू माँ सत्संग करने की वजह से हमारी आध्यात्मिक प्रगति तो नहीं रूक रही न, उसका खास ध्यान रखते थें।

तुम्हें यहाँ तक पहुँचने में जिन्होंने मेहनत की है, उन्हें आज Thank you कहना कैसे भूल सकते हैं? तो नीचे दिए गए नमूने में से जो आपको पसंद हो वह बनाकर अपने प्यारे शिक्षकों को gift करो।

My Creation

आपके द्वारा Teachers के लिए बनाए गए Special gift के Photos हमें akramexpress4kids@gmail.com पर भेजें। बेस्ट क्राफ्ट को oct'20 के अक्रम एक्सप्रेस में प्रकाशित किया जाएगा।

पज़ल का जवाब :

Akram Express

September 2020
Year : 8, Issue : 5
Conti. Issue No.: 90

Date of Publication On 8th Of Every Month
RNI No.GUJHIN/2013/53111

और अंत में..

"एक इंसान को इतना बड़ा होना चाहिए कि,
१) वह अपनी भूलों का स्वीकार कर सके,
२) इतना स्मार्ट होना चाहिए कि उससे सीख सके और
३) इतना स्ट्रोंग होना चाहिए कि उसे सुधार सके।
-जॉन सी. मैक्सवेल"

"भूलों की हमेशा माफी मिलती है, ऐसा होता है। सिर्फ उनका स्वीकार करने की हममें हिम्मत होनी चाहिए।
-ब्रुस ली"

"यदि आप अपनी भूलों को नकारने में प्रवृत नहीं हो तो आप ज़रूर उनसे बहुत कुछ सीख सक्ते हो।
-स्टेफेन.आर.कोवेय"

"मैंने गलतियाँ की हैं लेकिन उन्हें ढँकने की गलती कभी नहीं की।
-जेम्स गॉर्डन बेनेह"

अक्रम एक्सप्रेस के सदस्यों के लिए सूचना

१. आपकी वार्षिक सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपकी इस महीने में आई हुई अक्रम एक्सप्रेस के कवर के लेबल पर लगे हुए मेम्बरशीप नं. के बाद **#** हो तो यह आपकी अंतिम अक्रम एक्सप्रेस है। उदा. **AGIA4313#** और यदि लेबल पर मेम्बरशीप नं. के बाद **##** हो तो अगले महीने में आपकी सदस्यता समाप्त होगी। उदा. **AGIA4313##** अक्रम एक्सप्रेस रिन्यूअल की जानकारी संपादकीय पेज पर दी गई है।

२. यदि किसी महीने का अक्रम एक्सप्रेस आपको नहीं मिला हो तो नीचे दी गई माहिती फोन नं. ८१५५००७५०० पर **SMS** करें।

१. कच्ची पावती नंबर या **ID No.**, २.पूरा ऐड्रेस पिन कोड के साथ, ३. जिस महीने का मैगेज़ीन नहीं मिला हो, उस महीने का नाम।

Publisher, Printer & Editor - Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation
Printed at Amba offset :- B-99 GIDC, Sector - 25, Gandhinagar - 382025